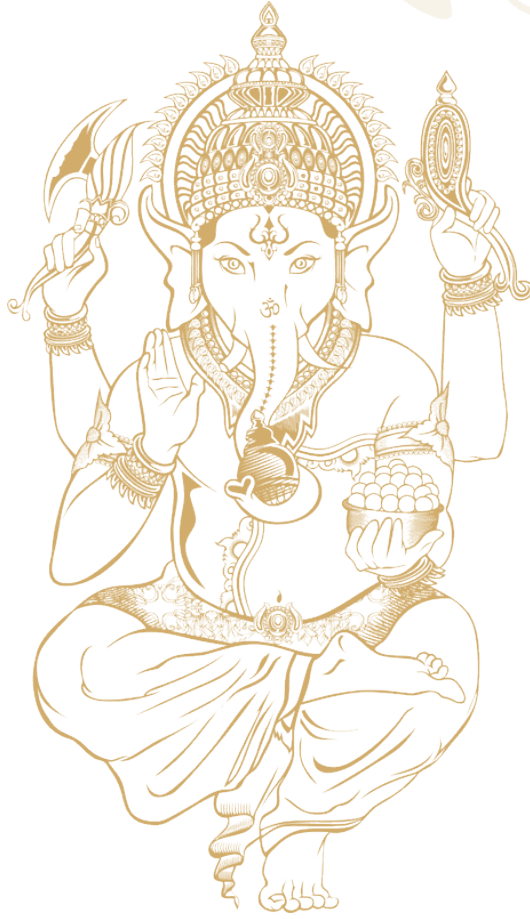




Mr.



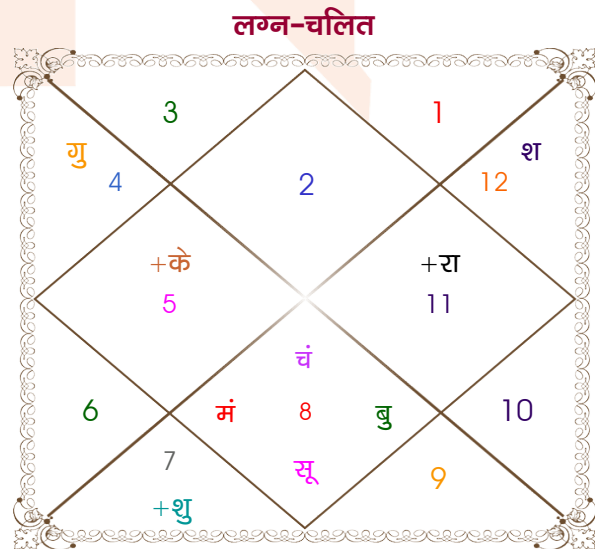
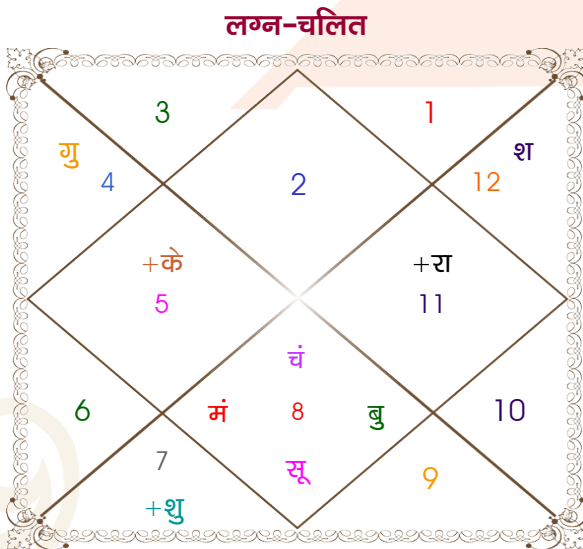
Ms.

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120253703

पुल्लिंग : _____ लिंग _____ स्त्रीलिंग _____
 20/11/2025 : _____ जन्म तिथि _____ 20/11/2025
 गुरुवार : _____ दिन _____ गुरुवार _____
 घंटे 17:43:00 : _____ जन्म समय _____ 17:43:00 घंटे
 घटी 27:17:18 : _____ जन्म समय(घटी) _____ 27:17:18 घटी
 India : _____ देश _____ India _____
 Delhi : _____ स्थान _____ Delhi _____
 28:39:00 उत्तर : _____ अक्षांश _____ 28:39:00 उत्तर
 77:13:00 पूर्व : _____ रेखांश _____ 77:13:00 पूर्व
 82:30:00 पूर्व : _____ मध्य रेखांश _____ 82:30:00 पूर्व
 घंटे -00:21:08 : _____ स्थानिक संस्कार _____ -00:21:08 घंटे
 घंटे 00:00:00 : _____ ग्रीष्म संस्कार _____ 00:00:00 घंटे
 06:48:04 : _____ सूर्योदय _____ 06:48:04
 17:25:30 : _____ सूर्यास्त _____ 17:25:30
 24:13:10 : _____ चित्रपक्षीय अयनांश _____ 24:13:10

विंशोत्तरी शनि 14वर्ष 3मा 1दि शनि	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी शनि 14वर्ष 3मा 1दि शनि
20/11/2025	10:06:07	वृष	लग्न	वृष	10:06:07	20/11/2025
21/02/2040	04:12:27	वृश्चि	सूर्य	वृश्चि	04:12:27	21/02/2040
20/11/2025	06:39:53	वृश्चि	चंद्र	वृश्चि	06:39:53	20/11/2025
बुध	17:20:38	वृश्चि	मंगल	वृश्चि	17:20:38	बुध
03/11/2026	03:55:40	वृश्चि व	बुध व	वृश्चि	03:55:40	03/11/2026
केतु	00:48:11	कर्क व	गुरु व	कर्क	00:48:11	केतु
13/12/2027	22:47:39	तुला	शुक्र	तुला	22:47:39	13/12/2027
शुक्र	00:59:25	मीन व	शनि व	मीन	00:59:25	शुक्र
सूर्य	20:08:51	कुंभ व	राहु व	कुंभ	20:08:51	सूर्य
चन्द्र	20:08:51	सिंह व	केतु व	सिंह	20:08:51	चन्द्र
मंगल	05:16:06	वृष व	हर्ष व	वृष	05:16:06	मंगल
राहु	05:15:55	मीन व	नेप व	मीन	05:15:55	राहु
गुरु	07:28:42	मक	प्लूटो	मक	07:28:42	गुरु



अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	कीटक	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मृग	मृग	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	वृश्चिक	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

Mr. का वर्ग सर्प है तथा Ms. का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr. और Ms. का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

**तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम् ।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा ।।**

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल Mr. कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा ।
न मंगली मंगल राहु योग ।**

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र Mr. कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**सप्तमो यदा भौमः गुरुणां च निरीक्षिता ।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत् ।।**

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि Mr. कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Ms. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम भाव में स्थित है।

**तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम् ।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा ।।**

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल Ms. कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा ।
न मंगली मंगल राहु योग ।**

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र Ms. कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**सप्तमो यदा भौमः गुरुणां च निरीक्षिता ।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत् ।।**

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि Ms. कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते ।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

**त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः ।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत् ।।**

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Ms. कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः ।

त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत् ।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Mr. कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr. तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम है।

